रात्रि क्लास 29/11/68 ओम शान्ति शिवबाबा याद है?

भल कोई ओपीनियन्स भी लिखकर जाते हैं कि बहुत अच्छा है। तो भी कई कहेंगे हम इससे टाली(टैली) नहीं करते; क्योंकि शास्त्रों को बहुत मानते हैं ना और तुम लोग शास्त्रों को नहीं मानते हो। शास्त्र हैं भक्तिमार्ग के। तो एक ही बाप है जिसको नॉलेजफुल कहा जाता है। भक्तिमार्ग में कब कोई को नॉलेजफुल, जानी–जाननहार नहीं कहा जा सकता। मनुष्य जानी–जाननहार हो न सके। बाप के लिए कहते हैं जानी–जाननहार क्या है वह नहीं समझते। बाबा बतलाते हैं मैं क्या जानता हूँ। जानी–जाननहार अर्थात जो सभी कुछ जानते हैं। वही समझाते हैं सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज कृष्ण को होती नहीं। वह सभी है भक्तिमार्ग। सभी हैं भक्त, शास्त्रों को और गुरुओं को मानने वाले। गुरु कब सद्गति दे न सके। तुम बच्चों को मालूम हो गया इस झाड़ के कितने पत्ते हैं। पत्ते वृद्धि को पाते रहते हैं। आखरीन झाड़ का अन्त भी होता है। कैसे जड़–जड़ीभूत अवस्था को पाते हैं। वह भी तुम जानते हो फाउंडेशन है नहीं। यह चक्र फिरता रहता है। आयु को भी वह लोग नहीं जानते हैं। चौपड़ी में भी स्वस्तिका निकालते हैं। गणेशाय नमः लिखते हैं हरेक में। अभी तुम्हारी और उनकी बुद्धि में कितना फर्क है। वह है आसुरी मनुष्य मत। यह है ईश्वरीय मत। तुम समझा सकते हो श्रीमत राजयोग सिखलाते हैं। श्रेष्ठ राजाओं का राजा बनाते हैं। तो संगमयुगी ठहरे। संगम पर फिर कृष्ण कहाँ से आया? शिव जयंती, कृष्ण जयंती ज़रूर होनी है। तुम जानते हो कृष्ण जयन्ती ज़रूर होनी है। कृष्ण जयन्ती वही नारायण जयंती हुई। नारायण का और कोई समाचार देते नहीं हैं। तो यह है नई दुनिया के लिए नई नॉलेज। फिर दुनिया पुरानी ज़रूर होनी है। इसको नया बनाने वाला बाप ही ठहरा। यह नॉलेज है तुम्हारे पास। आते तो बहुत हैं। अच्छा-2 कहकर भी जाते हैं। तुम बच्चे समझते हो हम जो सर्विस करते हैं कल्प पहले भी ऐसे करते थे। यही रिज़ल्ट थी। कल्प-कल्पांतर यह रिज़ल्ट निकलती है। आस्ते–2 निकलती रहती है। मेहनत तो होती है ना। जिसने सुना वही भी प्रजा बनते हैं। संस्था वृद्धि को पाती जावेगी तो सभी की आँखें खुलेंगी। तार में भी समझाया गया है। तार भी छपेंगी। मैगज़िन में भी छपेगी। तुम समझते हो हम वारियर्स हैं। देहली पर घेराव डाल रहे हैं। दिल्ली से ही विजय का आवाज़ निकलना है। तुम भी कोशिश कर दिल्ली के बड़ों-2 को हाथ करते हो। आधा कल्प विकारी रहे हैं उनको निर्विकारी बनाया जाता है। यह नई बात नहीं है ना। दुनिया के मनुष्य नहीं समझते अभी संगमयुग है। माया तुम बच्चों को भी संगमयुग भुला देती है। संगमयुग याद हो (तो) स्वर्ग भी ज़रूर याद आये। वह खुशी भी रहे; परन्तु भूल जाते हैं। संगमयुग याद है तो बाप भी ज़रूर याद है। संगमयुग माना ही बाप ही याद। तो माया भुला देती है। सारा दिन याद नहीं रहती। बाप के साथ-साथ संगमयुग भी याद नहीं रहता। संगमयुग पर हो तब चक्र भी याद आता है; परन्तु माया बहुतों को भुला देती है। बाप कहते हैं मुझे याद करो। वह भी भूल जाते हैं, तो संगमयुग फिर कैसे याद पड़ेगा। संगमयुग और ही नई चीज़ है। बाप तो पुरानी चीज़ है। भक्ति में कब संगमयुग को याद किया जाता है क्या? बच्चे जो सारा दिन म्युज़ियम में सर्विस करते रहते हैं उनको घड़ी-2 याद पक्की हो जाती होगी। सेन्टर पर इतना सर्विस का चान्स नहीं। म्युज़ियम में तो सारा दिन सर्विस रहती है। बाप, टीचर, गुरु हैं, यह भी खड़े नहीं रह सकते हैं। याद ठहर जाये तो अहो सौभाग्य! बच्चों को विश्व की बादशाही मिलती है। उसके लिए मेहनत है ही याद की। म्युज़ियम में सबसे अच्छी उन्नति होती है। सर्विस कर फिर सर्विस का समाचार देते हैं, तो उनकी और ही जास्ती उन्नति होती है। बाप समाचार से ही खुश होते हैं अच्छा सर्विसएबुल है। अच्छा समाचार देते हैं। शौक है उनको सर्विस का। बाप को समाचार देते हैं, बाप रेसपाण्ड भी देते हैं। अच्छा समाचार बच्चों को सुनाया जाता है। तार को भी चार/पाँच दिनों से करैक्ट करते आये हैं। बाप को मेहनत करनी पड़ती है। ऐसा अच्छी रीत समझावें जो कुछ बुद्धि में तो बैठे। विश्व में शांति के लिए कितने कॉनफ्रेन्स आदि करते रहते हैं। उनको तो पता ही नहीं। बाप बतलाते हैं कैसे एक ही राज्य स्थापन होता है। अच्छी रीत समझाना है। बहुत-

बहुत हड्डी-रुचि से सर्विस करनी होती है। सर्विस भी होती है, साथ-2 डिससर्विस भी। महारथी पर माया वार करती है तो डिससर्विस करते होंगे। सर्विस से जास्ती कहाँ-2 डिससर्विस कर देते हैं अच्छे2 महारथी। समाचार आता है पुराना महारथी है; परन्तु डिससर्विस करती है। सिर्फ सर्विस होती रहे तो वृद्धि को पाये। माया डिससर्विस कराती है, इसलिए टाइम लगता है। गायन भी है बेहद का बाप बेहद का वर्सा देंगे। अच्छे-2 बच्ची (ब्राह्मण) भी बड़ी डिससर्विस करती है फिर उसको सर्विस में लाना बड़ी तकलीफ होती है। स्थापना तो होनी ही है ना। सर्वशक्तिवान बाप आते हैं इस नई दुनिया की स्थापन(ा) करने के लिए। मनुष्य ही इन बातों को समझ सकते हैं। जो नहीं समझ सकते, जो जानवर मिसल हैं, वह पद भी इतना नहीं पाते। यह भी ड्रामा है। आगे कहते थे ईश्वर ही करन करावनहार है। ईश्वर की दुःख-सुख देते हैं। बाप कहते हैं ड्रामा प्लैन अनुसार होता है। सब प्लैन्स पर बाप का प्लैन विजय पाता है। सबकी प्लैन्स मिट्टी में मिल जानी है। यह भी होंगे ही नहीं। ड्रामा भी(की) भावी बड़ी विचित्र है। समझते भी हैं विनाश जल्दी होने का है। बॉम्ब्स आदि बनाने में खर्चा बहुत-बहुत लगता, इसलिए कोई-कोई बनाते-बनाते बन्द कर देते हैं। दुनिया का विनाश ही होना है। यह है सबसे बड़ा दुनिया का समाचार। कोई डिससर्विस भी करते हैं, कहेंगे– ड्रामा अनुसार करते हैं। कुछ देरी है। कितने बच्चों को देखो माया ठहरने नहीं देती है। सर्विस की बातें सुनने से खुशी होगी। डिससर्विस सुनने से ख्याल होगा। लड़ाई का मैदान है ना। बॉक्सिंग होती है ना। लाखों रुपया खर्च होता है। यहाँ खर्चा आदि की बात नहीं। बुद्धि से काम लेना होता है। बाप आत्माओं को सभी बातें समझाते हैं। जैसे बाप को नॉलेज है वैसे तुम बच्चों को मिलती है। अविनाशी बाप से अविनाशी वर्सा मिलता है फिर भी नीचे तो उतरना होता है ना। सुख मिलता है तब उनको याद किया जाता है। बाप कितना सहज समझाते हैं। अनेकानेक अनगिनत बार समझाया होगा। तो इतना फिर याद भी रहना चाहिए। विचार होता रहता है आबू एक दिन बहुत ज़ोर भरेगा। ख्याल होता है नाम बहुत हो जावेगा। आबू तो सबसे बड़ा तीर्थ हो जावेगा। लेक के तरफ अच्छा प्लॉट ले लेना चाहिए। जैसे हरिद्वार पर ढेर जाकर बैठते हैं ऐसे यहाँ भी बेहद के बाप के तट पर आकर बैठ जावेंगे। सबसे बड़ा तीर्थ हो जावेगा ना। तुम बहुत अच्छा बनावेंगे। घड़ी-2 आकर सुनेंगे-समझेंगे। रिफ्रेश होने लिए कोई जल्दी, कोई देरी से आते हैं। आगे चल जल्दी आवेंगे। आगे चल तुम बहुत वण्डर्स देखेंगे। आबू का बहुत प्रभाव तुम देखेंगे। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार, गुडनाइट।

तुम बच्चों को दैवीगुण भी धारण करनी है। ऑरफन बन लड़ना-झगड़ना न है। माया इतनी जबरदस्त है जो अच्छे-2 फर्स्ट बच्चों को भी आपस में लड़ाई करा देती है। देह-अभिमान में आकर लड़ना-झगड़ना सिखला देती है। आपस में लून-पानी हो पड़ते हैं। महारथी बच्चों की तो अच्छी रीत माया खाल उतारती है। ऐसे मत समझो हम तो बहुत होशियार हैं। बहुत होशियार को ही माया पछाड़ती है। देहअभिमान में आने से बाप को भूल जाते हैं। ऐसे मीठे बाप को तो न भूलना चाहिए ना। स्त्री पति को भूलती है? पति मर जाता है तो उनके शरीर को याद करती रहती है। यह तो बेहद का बाप तुमको पढ़ा रहे हैं। बाप कहते हैं मैं तुमको विश्व का मालिक बनाता हूँ, तुम मुझे याद नहीं करते हो। माया भुलाकर कोई न कोई उल्टा काम करा देती है। चूहे मिसल काटती ऐसा है जो पता भी नहीं पड़ता है। इसलिए बाप फिर भी कहते रहते हैं अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो। औरों का भी कल्याण करो। बाप का पैगाम दे दैवीगुण धारण कराओ; परन्तु ड्रामा प्लैन अनुसार कम पद ही पाना है तो कर ही क्या सकते हैं। कल्प-2 न पढ़ते हैं, अभी न पढ़ेंगे। सिद्ध हो जाता है आगे कल्प भी नहीं पढ़ते थे। ऐसी चलन थी। नाम-रूप, देश-काल, चलन सब वही रहेगी। कल्प-2 का पुराना स्वभाव है, कल्प-2 उ(ऐ)से ही चलते रहेंगे। ओम।